भाग–प्रथम

झीलों का परिदृश्य

प्रस्तावना : जीवन के इस प्रतीक जल–एक्वा–नीलू–वाटर के लिए इंसान सदैव नदियों के किनारे बसा। झीलें बनायी और जतन किये, जिससे वह आसानी से पर्याप्त जल प्राप्त कर सके, लेकिन आधुनिक विकास के क्रम में वह जल स्रोतों को संरक्षित और सुरक्षित करना भूल गया जबकि सृष्टि के आरम्भ से मानव की सबसे बड़ी जरूरत शुद्ध पेयजल ही रही है।

पानी और झील का नाम आते ही दुनिया के हर किसी की जुबान पर पहला नाम आएगा–उदयपुर। उदयपुर के पूर्व शासकों ने भी वही किया जो कि दुनिया के अन्य देशों के राज्याधिकारियों ने किया। वर्तमान में जब झीलें प्रदूषित हो और ऐसा हमारी वजह से हो, तो यह किसी संगीन जुर्म से कम नहीं है। हम में जनता, प्रशासन और व्यवसायी तीनों वर्ग निहित हैं। ये झीलें उदयपुर में जनम, मरण और परण की साक्षी रही हैं। इन्होंने मेवाड़ में सिसोदिया वंश के 450 वर्षों से अधिक के शासनकाल को देखा तथा प्रदूषण एवं गन्दगी मुक्त रही। बदलते बनते शहर को देखा। गन्दे नालों का समावेश होते देखा। झीलों ने पेयजल के मुख्य स्रोत के रूप में अपने परिवर्तित रूप को देखा। अपनी जैव विविधता को खोते देखा। वर्तमान में बिगड़ी सूरत, दर्द से कराहती ये झीलें शायद यही सवाल करती है **"कब तक पुकारूँ और किसको पुकारूँ।"**

विश्व के पर्यटन मानचित्र पर प्रमुख स्थान प्राप्त झीलों की नगरी उदयपुर प्रवासियों की ही नहीं स्वदेशी पर्यटकों की भी पहली पसन्द रही है। यह शहर सूर्योदय की नगरी, पूर्व का वेनिस, राजस्थान का कश्मीर, भारतीय संस्कृति की राजधानी, विद्याक्षेत्र में द्वितीय काशी के नाम से भी जाना जाता है। विगत वर्षों में उदयपुर नगर विश्व में सुन्दरतम् नगर घोषित हो चुका है। इसका मुख्य श्रेय झीलों के प्राकृतिक सौन्दर्य, ऐतिहासिक धरोहर, धार्मिक महत्व तथा इसकी नैसर्गिक बनावट एवं झीलों के परस्पर जुड़े होने को जाता है। ये झीलें सदैव स्वच्छ पानी से भरी हुई मत्स्यजीवों, पक्षी–प्रेमियों एवं पर्यटकों की मनमोहक बनी रहे, किन्तु संतोष व आशा की किरण तब ही नजर आयेगी जब राजनेता, अधिकारी, नियोजक, आम नागरिक एवं विशेषकर युवा वर्ग इसका और अधिक जिम्मेदारी के साथ निर्वहन करें। यदि प्राथमिकता के आधार पर राज्य सरकार एवं स्थानीय निकाय विभाग–नगर निगम, नगर विकास प्रन्यास, जल संसाधन, जनस्वास्थ्य एवं अभियांत्रिकी, प्रदूषण नियन्त्रण, मत्स्य आदि विभाग झीलों का वांछित कार्य पूरा करें, तो इन झीलों का कायाकल्प हो सकेगा। परिणामस्वरूप पर्यटकों के दिलो–दिमाग में इन झीलों की एक विशिष्ट यादगार छवि बनेगी। इस ऐतिहासिक धरोहर को विश्व की सुन्दरतम झीलों का दर्जा दिलाना प्रत्येक उदयपुरवासी का सपना ही नहीं वरन् दृढ़ संकल्प होना चाहिये।

पिछोला झील
दूध तलाई
अमरकुण्ड
कुम्हारिया तालाब
रंगसागर
स्वरूपसागर
गोवर्द्धनसागर
फतहसागर
उपला तालाब
रूपसागर
नेला तालाब
जोगी तालाब
बड़ी तालाब
छोटा मदार तालाब
बड़ा मदार तालाब
नान्देश्वर तालाब
उदयसागर
जयसमन्द
राजसमन्द

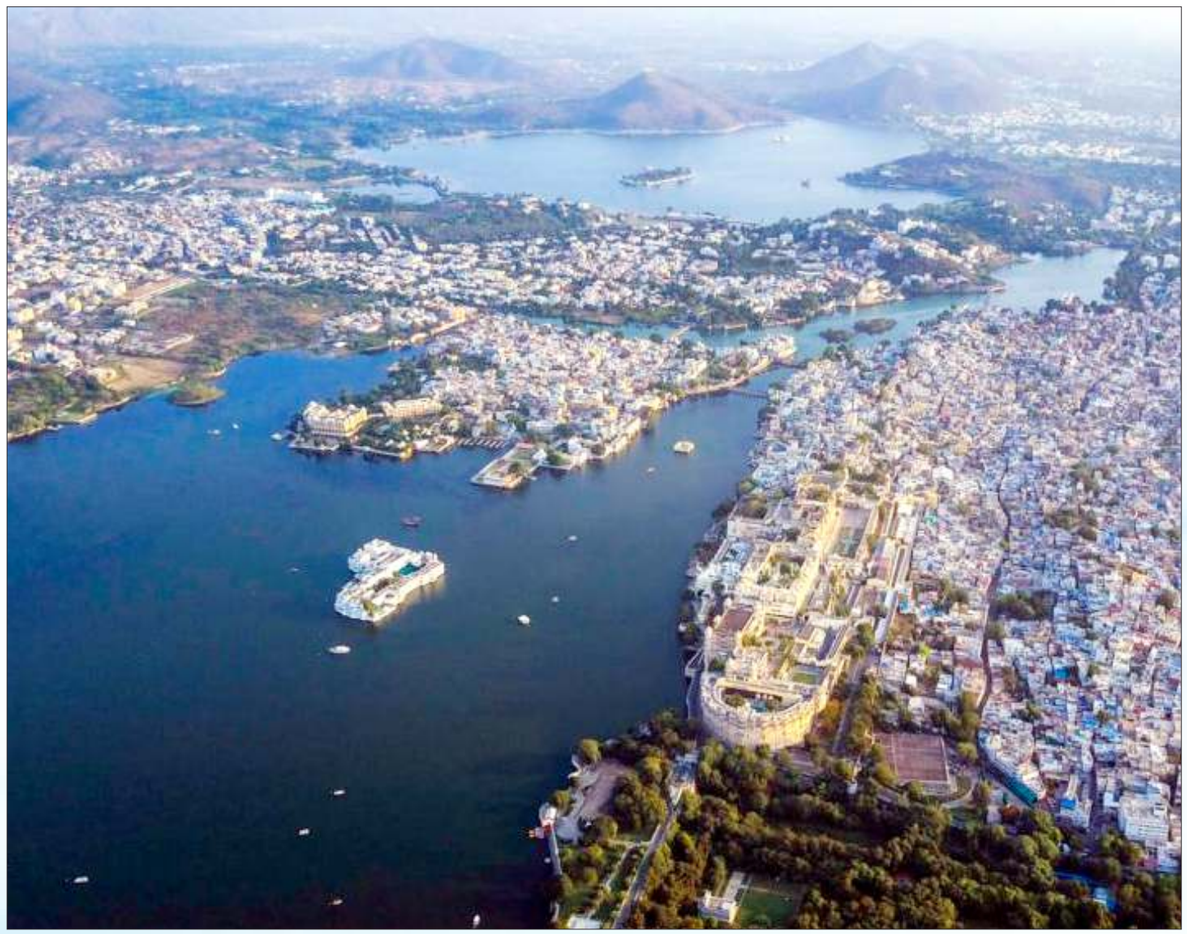

विहंगम दृश्य : उदयपुर की मुख्य झीलें, उनका स्वरूप, आपसी लिंक एवं चारों ओर बसा ऐतिहासिक शहर

प्रमुख झीलें एवं उनका संक्षिप्त विवरण : यह खूबसूरत शहर उदयपुर अरावली पर्वतमालाओं के साथ पिछोला, फतहसागर, रंगसागर, स्वरूपसागर एवं छोटी झीलें अमरकुण्ड, दूध तलाई, कुम्हारिया तालाब, गोवर्द्धनसागर एवं रूपसागर के झील संकुल से घिरा हुआ है। इसके अतिरिक्त चारों ओर बड़ी का तालाब, छोटा मदार तालाब, बड़ा मदार तालाब, नान्देश्वर तालाब, उदयसागर एवं अनेक छोटी झीलें स्थित हैं। शहर के उत्तर एवं दक्षिण में दो बड़ी झीलें राजसमन्द एवं जयसमन्द इस क्षेत्र के पारिस्थितिकी तन्त्र को व्यापकता प्रदान करती हैं। चिरकाल से ये शांत, सुन्दर दृश्यमान झीलें आज पर्यावरण की दृष्टि से तबाही की ओर बढ़ रही हैं। इसके मुख्य कारण हैं–प्रदूषित जल रिसाव, गाद जमाव, नियमित रखरखाव का अभाव, जन–सहभागिता की कमी के साथ इन झीलों के जलग्रहण क्षेत्र में वनों की अंधाधुंध कटाई इत्यादि। उक्त कारक इस नम भूमि पारिस्थितिकी तन्त्र को संकट में धकेल रहे हैं। इसका झीलों की जैव–विविधता पर अत्यधिक प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है।

उदयपुर का झील तन्त्र, बेड़च एवं उसकी सहायक नदियों से अस्तित्व में आया है। यह ऊपरी बेड़च बेसिन का अविभाज्य अंग है। यह झील तन्त्र अन्ततोगत्वा वृहद् गंगा नदी पनढ़ाल से बनास, चम्बल और यमुना नदियों के माध्यम से जुड़ा हुआ है। अरावली पर्वत श्रृंखलाओं से बेड़च नदी की विभिन्न सहायक नदियाँ निकलती हैं।

उदयपुर शहर की मुख्य झील पिछोला से जुड़ी दक्षिण में गोवर्द्धनसागर, पूर्व में दूध तलाई, मध्य में कुम्हारिया तालाब, रंगसागर एवं उत्तर दिशा में स्वरूपसागर एवं आगे जाकर फतहसागर भी एक लिंक चैनल के माध्यम से जुड़ा हुआ है। इस प्रकार ये सभी झीलें एक–दूसरे से जुड़ी हुई हैं। यह इनकी व्यापकता एवं प्राकृतिक सौन्दर्य को दर्शाने के साथ इनकी पाल की बनावट एक उत्कृष्ट शिल्प का परिचायक है।

उदयपुर की झीलों की विशेषताएँ

- **पिछोला (अमरकुण्ड, कुम्हारिया तालाब, रंगसागर, स्वरूपसागर, दूध तलाई, गोवर्द्धनसागर), फतहसागर (उपला तालाब), छोटा मदार, बड़ा मदार, बड़ी तालाब, उदयसागर, जयसमन्द एवं राजसमन्द मेवाड़ के पूर्व शासकों द्वारा अभिकल्पित एवं निर्मित ये आकर्षक झीलें वास्तव में जल संरक्षण की भावना से प्रेरित कुशल संरचनाएँ हैं।**
- **इनका निर्माण शहर को खूबसूरत बनाने के साथ पेयजल, सिंचाई, मत्स्यकीय, वन्यजीव निर्वाह एवं आम जनता को अकाल के वर्षों में राहत पहुँचाने के उद्देश्य से किया गया।**
- **झीलों का आपस में जुड़ा होना जल की दिशा परिवर्तन का एक अनूठा उदाहरण है।**
- **ये झीलें स्थानीय लोगों की आजीविका का एक मुख्य साधन है।**
- **ये झीलें शहर के सूक्ष्म वातावरण (पारिस्थितिकी तन्त्र), आबोहवा को स्वच्छ एवं अनुकूल बनाती हैं।**

वर्तमान में शहरीकरण के कारण झीलों की सुन्दरता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। इससे ये झीलें अतिक्रमण ग्रसित होने के साथ जल–मल प्रवाह से अत्यधिक प्रदूषित हुई हैं। वर्ष 1970 से पूर्व इन झीलों से सिंचाई भी की जाती थी, परन्तु पिछले पाँच दशकों से पिछोला एवं फतहसागर से प्राथमिकता के आधार पर पेयजल की आपूर्ति ही की जा रही है।

भौगोलिक स्थिति : वर्तमान में उदयपुर शहर 24° 25′ अक्षांश और 73° 43′ देशान्तर के मध्य फैला हुआ है। अरावली पर्वतमाला की छोटी–बड़ी वादियों में फैले हुए इस नगर की समुद्रतल से औसत ऊँचाई 578 मीटर है। इस भू–भाग के पश्चिम में इस शहर की प्रमुख झीलें स्थित है। उदयपुर घाटी का ढलान उत्तर–पश्चिम से दक्षिण–पूर्व दिशा में है। नगर निगम की सीमा में शहर की प्रमुख छः झीलें हैं। इसके अतिरिक्त रूपसागर, नेला तालाब, जोगी तालाब आदि अन्य 30 छोटी झीलों को मिलाकर कुल झीलों की संख्या 36 हैं। कुछ झीलों को संरक्षण एवं मरम्मत की आवश्यकता हैं जिन्हें थोड़े से प्रयासों से पुनर्जीवित किया जा सकता है। भौगोलिक स्थिति के आधार पर ये सभी झीलें ऊपरी बेड़च बेसिन में हैं। बेड़च बेसिन बनास बेसिन का ही एक अंग है जो चम्बल बेसिन, यमुना बेसिन में समाहित होते हुए गंगा बेसिन का एक घटक है। बेड़च समेत बनास बेसिन की अधिकांश सहायक नदियों का उद्गम अरावली पर्वतमाला के पूर्वी ढ़लानों से होता है। अरावली पर्वतमाला के पश्चिमी ढलान से लूणी, साबरमती, बाण्डी आदि नदियाँ निकलकर खम्भात की खाड़ी अरब सागर में मिल जाती हैं।

बेड़च बेसिन का उद्गम गोगुन्दा की पहाड़ियों के झरनों और जामुनिया नाला से होता है किन्तु नदी का स्वरूप मदार तालाबों से उभरता है। मदार से यह नदी दक्षिण–पूर्व की ओर बहती है। इस नदी की मदार में समुद्र तल से ऊँचाई 640.68 मीटर (2102 फीट) है तथा उदयसागर में समुद्र तल से ऊँचाई 546.50 मीटर (1793 फीट) है।

उदयपुर का झील संकुल : उदयपुर झील संकुल को निम्न भागों में विभाजित किया जा सकता है :– (1) ऊपरीय झीलें – बड़ी तालाब, छोटा व बड़ा मदार तालाब (2) शहर की झीलें – पिछोला, अमरकुण्ड, रंगसागर, कुम्हारिया तालाब, स्वरूपसागर, गोवर्द्धनसागर, दूध तलाई एवं फतहसागर (3) अनुप्रवाह झील – उदयसागर (4) आयड़ नदी के पूर्व और पश्चिम की छोटी झीलें।

छोटी झीलें : छोटी झीलें जो आयड़ नदी के पूर्व एवं पश्चिम की ओर स्थित हैं, में रूपसागर, नेला तालाब, जोगी तालाब, लखावली तालाब, रून्डेला तालाब आदि मुख्य हैं। इन छोटी झीलों का महत्व उनके आवाह क्षेत्र के आसपास के बाढ़ नियंत्रण, भू–भागों में भू–जल स्तर बढ़ाने हेतु हैं। इसके साथ ही साथ इन झीलों में अनेक पक्षी और जलीय जीव विचरण करते हैं।

सज्जनगढ़ से उदयपुर शहर की दोनों मुख्य झीलें : पिछोला एवं फतहसागर का भव्य प्राकृतिक स्वरूप

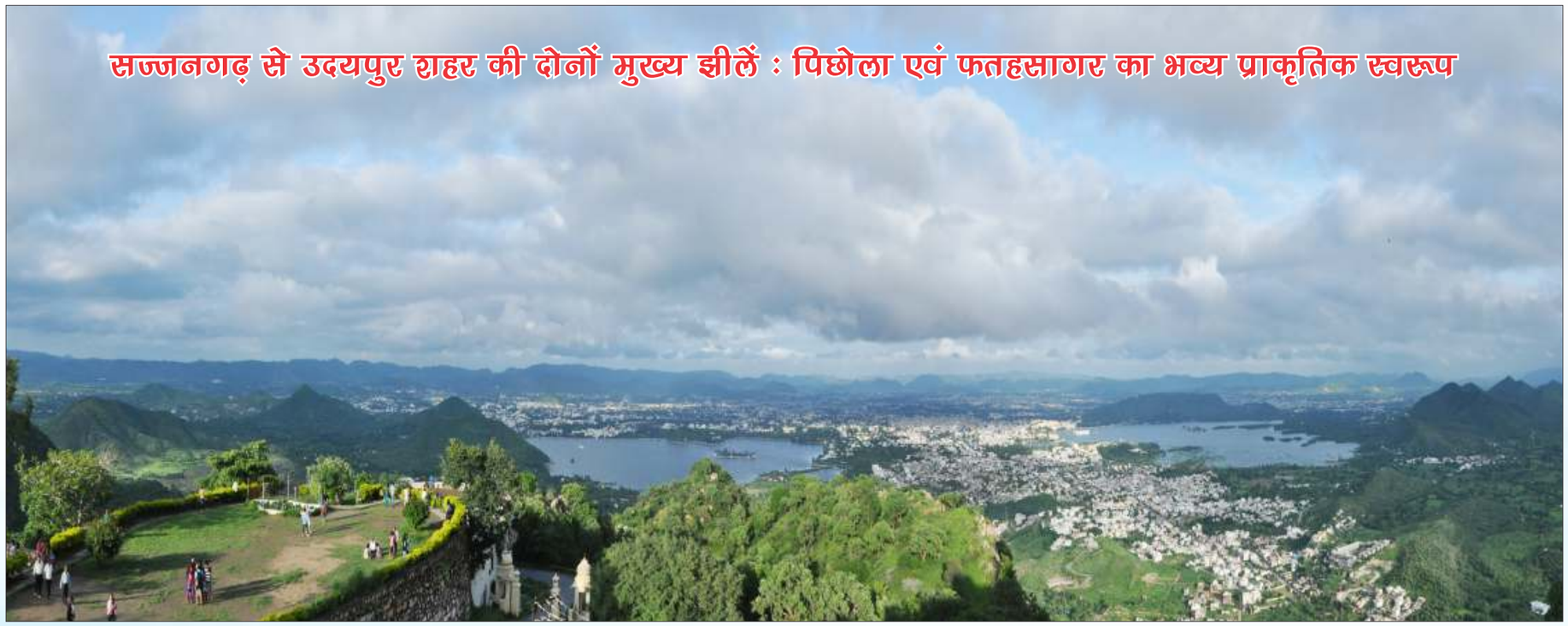

विशिष्ट लेखों से ...

उदयपुर बेसिन

सारांश : भौगोलिक दृष्टि से उदयपुर बेसिन चार नदियों आयड़, मोरवानी, अमरजोक एवं सीसारमा के संगम स्थल पर विशिष्ट भारतीय जल विभाजन रेखा के किनारे स्थित है। ये नदियाँ विश्व की प्राचीनतम् दक्षिणी मध्य अरावली पर्वत श्रृँखलाओं में से एक के पूर्वी ढलान के साथ गिर्वा क्षेत्र में प्रवाहित होती हैं। दक्षिणी राजस्थान के उदयपुर शहर में मानव निर्मित 8 झीलों का एक नेटवर्क विकसित किया गया है। 14वीं शताब्दी के पश्चात् शहर में दूध तलाई, पिछोला, अमरकुण्ड, रंगसागर, कुम्हारिया तालाब, स्वरूपसागर, गोवर्द्धनसागर एवं फतहसागर को विकसित किया गया। ये सभी झीलें आपस में एक–दूसरे के साथ जुड़ी हुई हैं। यह सब पूर्व मेवाड़ राज्य के सत्तारूढ़ महाराणाओं की अद्वितीय परिकल्पना एवं दूरदर्शिता का परिणाम है।

राणा लाखा के द्वारा वर्ष 1382–85 में सीसारमा नदी पर पिछोला झील का निर्माण करवाया गया। इस अवधारणा को अन्य महाराणाओं द्वारा सूक्ष्म जल विभाजन इकाइयों के रूप में उदयसागर, कुम्हारिया तालाब, गोवर्द्धनसागर, रंगसागर, स्वरूपसागर एवं फतहसागर का निर्माण कर आगे बढ़ाया गया। मेवाड़ राज्य के महाराणाओं को उदयपुर बेसिन की नदियों की दिशा–परिवर्तन एवं उन्हें आपस जोड़ने के सर्वप्रथम प्रयास का श्रेय मिला। महाराणा फतहसिंह जी ने 13 अगस्त, 1890 में नदी लिंक परियोजना का उद्घाटन किया। इस परियोजना के अन्तर्गत आयड़ नदी की दिशा–परिवर्तित कर इसके जल को फतहसागर में डाला गया। इस हेतु उदयपुर शहर से 6 कि.मी. दूर उत्तर–पश्चिम दिशा में स्थित चिकलवास गांव के पास आयड़ नदी पर एक बाँध का निर्माण कर एक लिंक नहर ''आयड़–मोरवानी नदी लिंक चैनल'' (चिकलवास फीडर) के माध्यम से आयड़ नदी में वर्षा ऋतु के दौरान प्रवाहित अतिरिक्त जल की दिशा–परिवर्तित कर फतहसागर में डाला गया। इस प्रकार महाराणा फतहसिंह जी को भारत में ही नहीं बल्कि विश्व में ''फादर ऑफ रिवर लिंक'' के रूप में माना जा सकता है। इस तरह मेवाड़ के महाराणाओं ने उदयपुर बेसिन में पानी के संरक्षण एवं प्रबन्धन का एक अनूठा उदाहरण विश्वभर में प्रस्तुत किया। उदयपुर की झीलें उदयपुर बेसिन की जीवन रेखा है जो न केवल पिछली छः सदियों की विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए, बल्कि उदयपुर को विश्व पर्यटन नक्शे पर झीलों की नगरी के रूप में पहचान दिलाने हेतु भी उत्तरदायी है।

प्रस्तावना : उदयपुर बेसिन 73°36′51'' से 73°49′46'' पूर्वी देशान्तर एवं 24°28′48'' से 24°42′56'' उत्तरी अक्षांश के मध्य स्थित है। यह बेसिन एक तश्तरी आकार में पूर्व से पश्चिम 22 कि.मी. चौड़ाई एवं उत्तर से दक्षिण 24 कि.मी. लम्बाई में फैला हुआ है। यह दक्षिण में चौड़ा एवं उत्तर में संकड़ा है। इसकी औसत ऊँचाई समुद्रतल से 577 मीटर ऊपर है। यह बेसिन कर्क रेखा से 122 कि.मी. दक्षिण में स्थित है।

उदयपुर बेसिन अरावली पर्वत श्रेणियों से घिरा घाटी के रूप में एक तश्तरी के आकार का बेसिन है, जिसे इन पर्वत श्रेणियों ने चारों तरफ से घेरा हुआ है, स्थानीय स्तर पर इसे 'गिर्वा' कहा जाता है जिसका तात्पर्य है – पहाड़ों का घेरा अथवा पर्वतों की करधनी। उदयपुर बेसिन में काफी हद तक अरावली एवं पोस्ट अरावली की भू–वैज्ञानिक प्रणालियों का प्रभुत्व है जिसमें पायराइट एवं शीस्ट चट्टानें प्रमुख हैं। मुख्य शहरी क्षेत्र मुलायम एवं टूटी हुई पायराइट, शीस्ट एवं मेटाग्रेवेक में रूपान्तरित चट्टानों पर स्थित है। ऊपरी जलग्रहण क्षेत्र की चट्टानें पायराइट, शीस्ट, बुनियादी ज्वालामुखी एवं पायरोक्लास्टिक्स के साथ मेट समूह एवं

विहंगम परिदृश्य : मुख्य उदयपुर शहर एवं उत्तरी भू-भाग पर अवस्थित पिछोला झील तंत्र

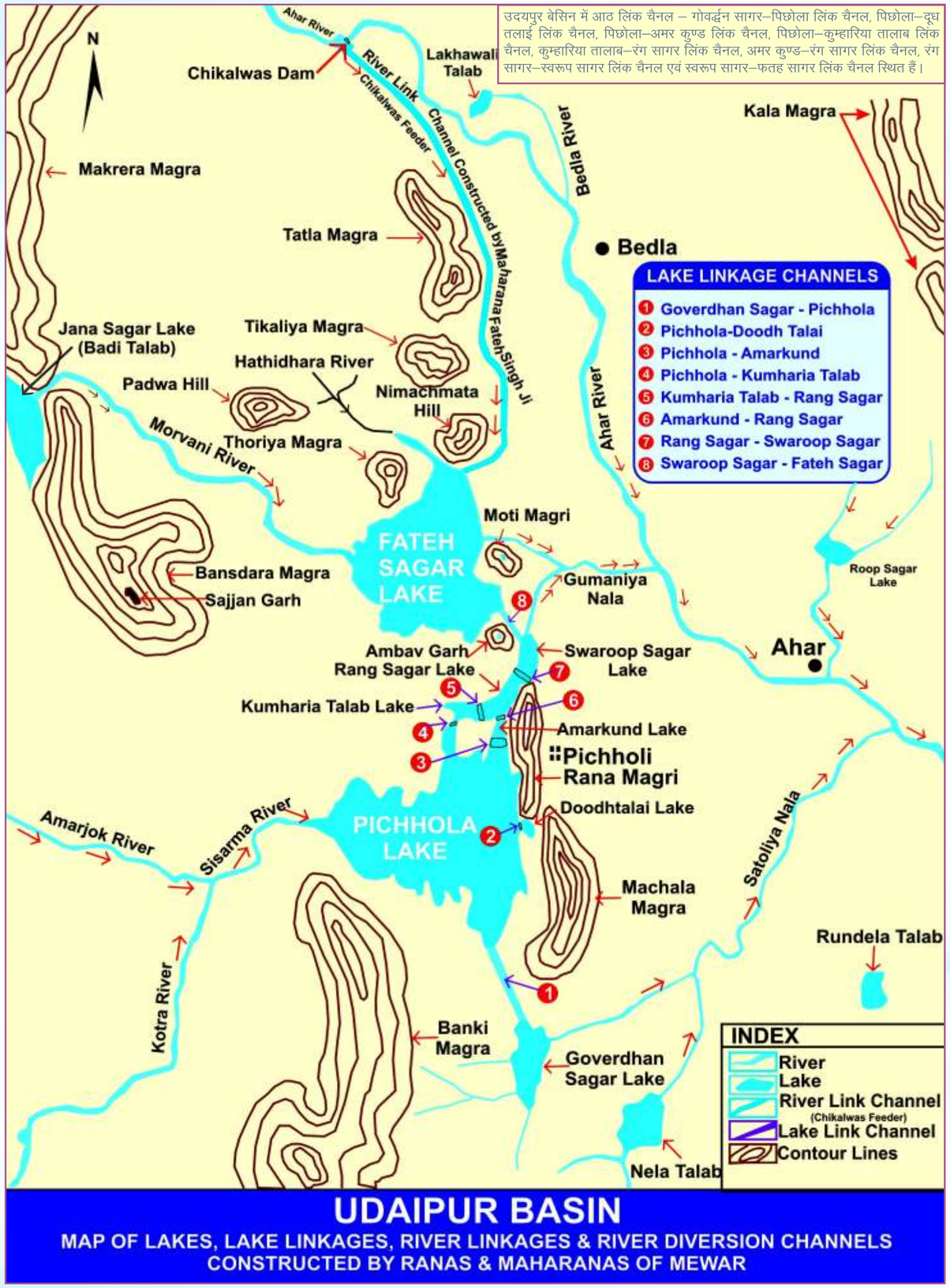

संगमरमर के परिक्षेत्रों की संरचना है। लाइम स्टोन, लायनामेन्ट्स एवं ग्रेनाइट के निशान सीसारमा नदी के साथ पश्चिम में पाये जाते हैं। ये लायनामेन्ट्स क्षेत्र में फ्रेक्चर क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं तथा जल निकासी का नियंत्रण और जल बेसिन में झीलों के पुनर्भरण के लिए नाली के रूप में भी कार्य करते हैं। उदयपुर की झीलों में भूमिगत रिसाव की कोई समस्या नहीं हैं।

इस क्षेत्र का जल निकास आयड़ नदी एवं इसकी सहायक नदियों द्वारा होता है। इस क्षेत्र से होकर बहने वाली यह एक प्रमुख नदी है। यह गोगुन्दा की पहाड़ियों से उत्तर–पश्चिम की ओर निकलकर 30 कि.मी. की दूरी तय कर पूर्व दिशा में जाकर उदयसागर में मिल जाती है। सीसारमा नदी इसकी महत्वपूर्ण सहायक नदियों – अमरजोक एवं कोटड़ा नदी के साथ पिछोला झील में मिलती है। आयड़ नदी एवं इसकी सहायक नदियाँ प्राकृतिक रूप से मौसमी हैं। ये केवल वर्षा ऋतु में ही बहती हैं तथा शेष अवधि में शुष्क हो जाती हैं। भारत की प्रमुख जल विभाजन समोच्च रेखा 610 मीटर के ऊपर से उदयपुर बेसिन के पश्चिम एवं दक्षिण की ओर गुजरती है।

जलवायु के आधार पर उदयपुर बेसिन के उत्तर में अर्द्ध–शुष्क क्षेत्र एवं दक्षिण में उप–आर्द्र क्षेत्र अवस्थित है। यहां 65 से.मी. औसत वार्षिक वर्षा होती है। अधिकतर वर्षा दक्षिण–पश्चिम मानसून के द्वारा वर्षा ऋतु में होती है। सर्दियाँ हल्के तापमान एवं कभी–कभी शीतलहर के साथ सूखी रहती हैं। इस बेसिन में वर्षा की प्रकृति अत्यधिक अनिश्चित एवं अस्थिर होती है। यहाँ होने वाली वर्षा की मात्रा में उच्च परिवर्तनशीलता है। इसके फलस्वरूप वर्षा के साथ सूखा पड़ना बेसिन की एक विशिष्ट पहचान है।

जलवायु की उपरोक्त परिस्थितियों एवं सीमित प्राकृतिक जल संसाधनों को ध्यान में रखते हुए मेवाड़ राज्य के तत्कालीन महाराणाओं ने उदयपुर बेसिन में स्थानीय आबादी के लिए पानी की उपलब्धता की समस्याओं को दूर करने के लिए कुछ झीलों / तालाबों का निर्माण करवाया। उदयपुर शहर में आठ झीलें एक–दूसरे से परस्पर जुड़ी हुई होकर इस बेसिन के निवासियों के लिए जल का प्रमुख स्रोत हैं। उदयपुर बेसिन में आठ लिंक चैनल – गोवर्द्धन सागर–पिछोला लिंक चैनल, पिछोला–दूध तलाई लिंक चैनल, पिछोला–अमर कुण्ड लिंक चैनल, पिछोला–कुम्हारिया तालाब लिंक चैनल, कुम्हारिया तालाब–रंग सागर लिंक चैनल, अमर कुण्ड–रंग सागर लिंक चैनल, रंग सागर–स्वरूप सागर लिंक चैनल एवं स्वरूप सागर–फतह सागर लिंक चैनल स्थित हैं।

पिछोला झील – यह शहर की सभी झीलों में से एक प्राचीनतम् एवं मुख्य झील है। इसका निर्माण 600 वर्ष पूर्व 1382 से 1385 ईस्वी के मध्य राणा लाखा द्वारा करवाया गया। (कुछ इतिहासकारों के मतानुसार इसका निर्माण राणा लाखा के शासनकाल में एक बंजारे के द्वारा करवाया गया था।) यह झील शहर के दक्षिणी–पश्चिमी भाग में 24°34′ उत्तरी अक्षांश एवं 73°70′ पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। इस झील का नाम 'पिछोली' नामक गाँव से निकला है। इसका कुल जलग्रहण क्षेत्र 6.96 वर्ग कि.मी. के आसपास है। इसकी कुल, छलकाव एवं स्थिर क्षमता क्रमशः 483, 318 एवं 165 मिलियन क्यूबिक फीट है। इसकी अधिकतम् गहराई 10.5 मीटर है। यह झील गोवर्द्धनसागर, दूधतलाई, अमरकुण्ड, रंगसागर एवं कुम्हारिया तालाब से परस्पर जुड़ी हुई है।

अमर कुण्ड – यह पिछोला झील एवं रंगसागर के मध्य स्थित है। इसका निर्माण मेवाड़ के मुख्यमंत्री श्री अमरचन्द बड़वा ने वर्ष 1874 में करवाया। बाद में महाराणा सज्जन सिंह जी ने इसका पिछोला झील में विलय करवा दिया। अब यह पिछोला झील के एक भाग के रूप में माना जाता है। अमर कुण्ड परस्पर पिछोला एवं रंगसागर से एक लिंक चैनल के माध्यम से जुड़ा हुआ है।

कुम्हारिया तालाब – इसका निर्माण वर्ष 1559–61 में राणा उदय सिंह–द्वितीय द्वारा उदयपुर सिटी पैलेस की नींव रखने के समय करवाया गया। यह मिट्टी के बर्तन एवं ईंटों से बना हुआ है। यह भी पिछोला झील एवं रंगसागर से परस्पर जुड़ा हुआ है।

रंगसागर – इसका निर्माण वर्ष 1668 में राणा राज सिंह–प्रथम द्वारा करवाया गया। यह झील 700 मीटर लम्बी एवं 245 मीटर चौड़ी है। इसकी अधिकतम् गहराई 7 मीटर है। यह दक्षिण में पिछोला झील एवं उत्तर में स्वरूपसागर एवं फतहसागर के बीच एक लिंक चैनल के रूप में कार्य करती है। इसकी जल ग्रहण क्षमता 1000 मिलियन क्यूबिक फीट है। यह अमरकुण्ड एवं कुम्हारिया तालाब से परस्पर जुड़ा हुआ है।

स्वरूपसागर – यह एक नाशपाती के आकार की झील है जिसका निर्माण महाराणा स्वरूप सिंह जी द्वारा वर्ष 1858 में करवाया गया। इसकी कुल जल भण्डारण क्षमता 427 मिलियन क्यूबिक फीट है। इसकी छलकाव एवं स्थिर क्षमता क्रमशः 247 एवं 180 मिलियन क्यूबिक फीट है। इसका कुल क्षेत्र 4 वर्ग कि.मी. एवं अधिकतम् गहराई 13.4 मीटर है। यह रंगसागर एवं फतहसागर से परस्पर जुड़ा हुआ है।

दूध तलाई – यह उदयपुर बेसिन के झील क्षेत्र की सबसे छोटी झील है। इसका निर्माण एक खानाबदोश ''बंजारा'' के द्वारा वर्ष 1375 से 1385 के लगभग किया गया। खानाबदोश बंजारा अपने मवेशियों के लिए इसका उपयोग करता था। गर्मियों के मौसम में पिछोली के ग्रामीणों के द्वारा भी दूध तलाई के जल का उपयोग किया जाता था। इस जल स्रोत का निर्माण लगभग छः सौ वर्ष पूर्व उदयपुर बेसिन में पहली बार किया गया। यह पिछोला झील से एक लिंक चैनल के माध्यम से जुड़ी हुई है।

गोवर्द्धनसागर – यह झील पिछोला के दक्षिण में 24°34′ उत्तरी अक्षांश एवं 74°42′ पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। वर्ष 1855 में महाराणा स्वरूप सिंह जी द्वारा इसका निर्माण करवाया गया। इसका कुल जलग्रहण क्षेत्र 2.5 वर्ग कि.मी. एवं इसकी छलकाव क्षमता 9 मिलियन क्यूबिक फीट है। यह पिछोला झील से एक लिंक चैनल के माध्यम से जुड़ी हुई है।

फतहसागर – फतह सागर शहर की दूसरी प्रमुख झील है। यह झील शहर के उत्तरी–पश्चिमी भाग में 24°35′ उत्तरी अक्षांश, 73°37′ पूर्वी देशान्तर एवं समुद्री तल से 578 मीटर ऊँचाई पर स्थित है। यह एक नाशपाती जैसी मध्यम आकार की झील है जिसका निर्माण सर्वप्रथम राणा जयसिंह जी द्वारा वर्ष 1680 में करवाया गया। वर्ष 1889 में महाराणा फतहसिंह जी द्वारा इसका पुनर्निर्माण करवाया गया। वर्तमान बाँध की आधारशिला कर्नाट के ड्यूक द्वारा रखी गयी जो कि उस समय उदयपुर भ्रमण पर आये हुए थे। इस झील का बाँध 720 मीटर लम्बा, लगभग 100 मीटर चौड़ा एवं पूर्व दिशा के भूतल स्तर से (सहेलियों की बाड़ी) 40 मीटर ऊंचा है। फतहसागर 2.6 कि.मी. उत्तर–दक्षिण एवं 1.8 कि.मी. पूर्व–पश्चिम दिशा में फैला होकर लगभग 5 वर्ग कि.मी. कुल जल फैलाव को आवरित करता है तथा इसकी अधिकतम् गहराई 12 मीटर है। इसका कुल जलग्रहण क्षेत्र 41 वर्ग कि.मी. है। इसकी कुल, छलकाव एवं स्थिर क्षमता क्रमशः 427.60, 247.60 एवं 180 मिलियन क्यूबिक फीट है। फतहसागर स्वरूपसागर के साथ एक लिंक चैनल तथा आयड़ नदी के साथ भी एक लिंक चैनल 'चिकलवास फीडर' के माध्यम से जुड़ा हुआ है। साथ ही वर्षाकाल में मोरवानी नदी के माध्यम से बड़ी तालाब के छलकाव उपरान्त अतिरिक्त जल भी इस झील में समाहित होता है।

ऐतिहासिक परिदृश्य : उदयपुर शहर राजमहल से पिछोला, अमरकुण्ड, रंगसागर, कुम्हारिया तालाब एवं फतहसागर

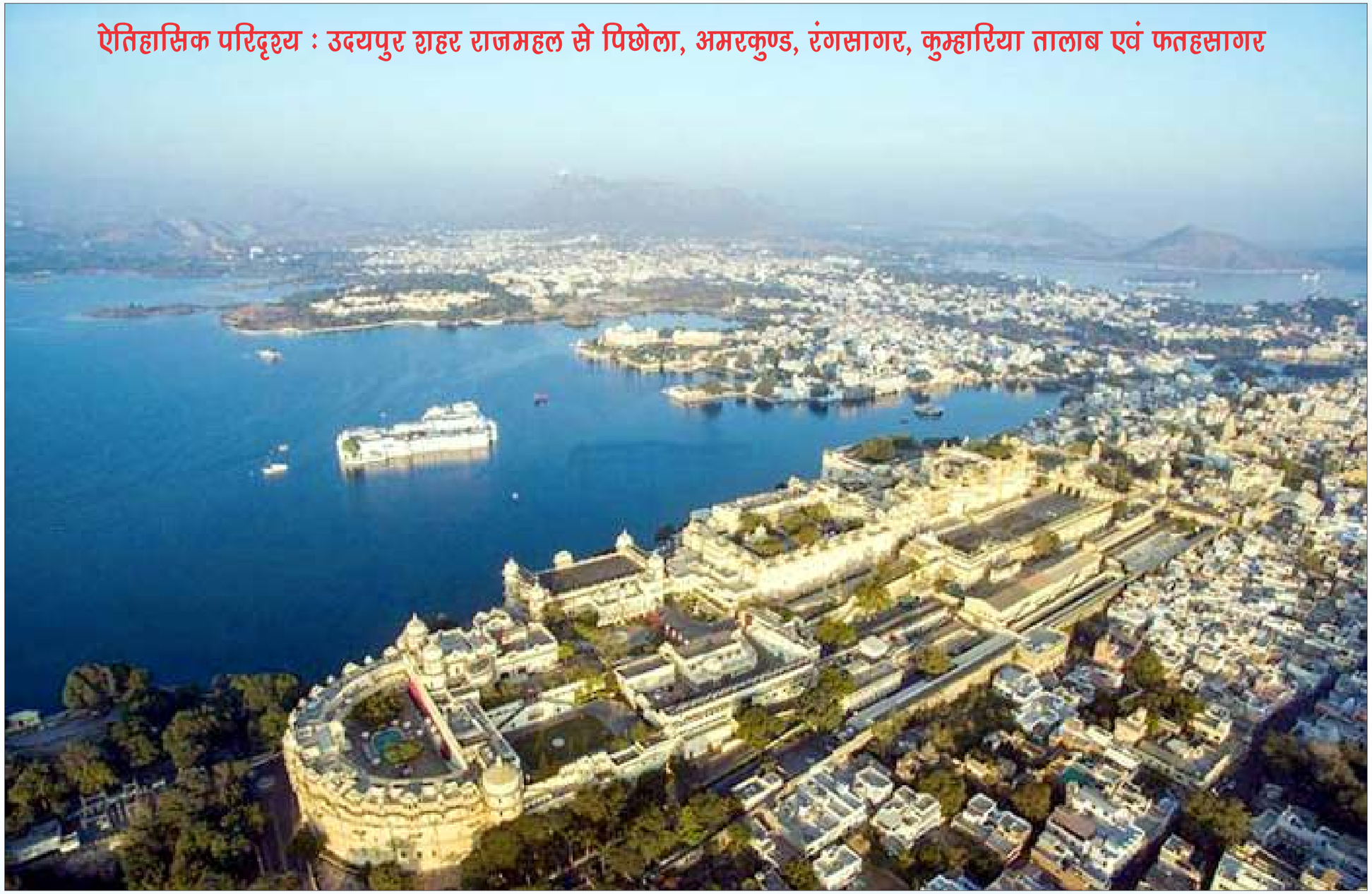

ये सभी आठों झीलें मानव निर्मित एवं एक–दूसरे के साथ जुड़ी हुई हैं। वास्तव में उदयपुर शहर को इसके संस्थापक राणा उदय सिंह जी –द्वितीय ने अपनी कुशल रणनीतिक सोच एवं आक्रमणकारियों के निरन्तर हमलों से अपनी प्रजा एवं वंश की रक्षा के उद्देश्य से अरावली की पहाड़ियों के घेराव के मध्य बसाया। मेवाड़ राज्य की उप–आर्द्र एवं अर्द्ध–शुष्क परिस्थितियों तथा जल की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए मेवाड़ के महाराणाओं ने आम आदमी की जरूरतों को पूरा करने तथा वर्षपर्यन्त मानसून के शुष्क रहने के दौरान भी पानी की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए इन झीलों को विकसित किया। ये झीलें अतुलनीय अभियांत्रिकी के साथ इस तरह विकसित एवं अभिकल्पित की गयी हैं कि भले ही वे अलग–अलग गहराई के साथ समुद्री तल से विभिन्न ऊँचाइयों पर स्थित हैं परन्तु जब वे पूर्णतया भर जाती हैं तब उनका जल स्तर एक समान हो जाता है। ये परस्पर एक–दूसरे से जुड़ी हुई हैं ताकि जब एक झील भर जाती है तब उसका अधिशेष पानी अन्य झीलों में स्वतः ही हस्तान्तरित हो जाता है। इस प्रकार ये झीलें जल संरक्षण का एक अनूठा उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। मानव निर्मित माइक्रो वाटरशेड, नदी दिशा परिवर्तन एवं नदी लिंक कार्य में उदयपुर बेसिन ने 600 से 127 वर्ष पूर्व ही अपनी जगह बना ली थी।

मेवाड़ के संरक्षक सदैव आमजन की जरूरतों एवं उनके अधिकतम् कल्याण की अवधारणा के प्रति सजग थे। इसके परिणामस्वरूप मेवाड़ राज्य एक ऐसा राज्य था जहाँ विकास की गतिविधियाँ, यहां तक कि प्राकृतिक आपदाओं के अलावा युद्ध के समय भी निर्बाध रूप से चलती रही। राज्य के संरक्षकों के द्वारा ढाँचागत सुविधाओं के अन्तर्गत अत्यावश्यक एवं मांग के अनुसार क्षेत्र के समग्र विकास का उत्तरदायित्व निभाया गया। मेवाड़ के महाराणा जल प्रबन्धन के महत्व से पूर्ण रूप से अवगत थे तथा उन्होंने इस प्रकार की योजनाओं के विकास को सदैव प्रोत्साहित किया जिनसे उस क्षेत्र में जल संरक्षण किया जा सकता था।

वर्तमान में संरक्षण के कुछ तरीके जैसे– वाटरशेड प्रबन्धन, नदी अन्तर–सम्बन्ध, नदी दिशा परिवर्तन, झील अन्तर–सम्बन्ध आदि उनके द्वारा 600 वर्ष पूर्व ही विकसित कर दिये गये थे जो उनके जल प्रबन्धन की सूझबूझ एवं कौशल को दर्शाता है। उदाहरण के लिए राणा उदयसिंहजी–द्वितीय को जलग्रहण क्षेत्र नियोजन के अग्रणी के रूप में माना जा सकता है जिन्होंने वर्ष 1562 में आयड़ नदी के उस पार उदयसागर का निर्माण किया था। जलग्रहण क्षेत्र के आधार पर लोगों के जीवन स्तर में सुधार करने का यह एक अनुकरणीय प्रयास था। इस अवधारणा को अन्य महाराणाओं द्वारा माइक्रो वाटरशेड़ इकाइयों के रूप में गोवर्द्धनसागर, पिछोला, अमर कुण्ड, कुम्हारिया तालाब, रंगसागर, स्वरूपसागर एवं फतहसागर का निर्माण कर आगे बढ़ाया गया।

लगभग 350 वर्ष पूर्व राणा राजसिंहजी–प्रथम ने नदी दिशा परिवर्तित करने का पहला प्रयास किया जब उबेश्वर नदी के पानी की दिशा–परिवर्तित कर मोरवानी नदी के माध्यम से धार गांव के समीप एक चैक डेम बनाकर जाना सागर (बड़ी तालाब) के लिए लाया गया। इससे पहले उबेश्वर नदी का उपयोग छोटा मदार झील में जल प्रवाहित करने हेतु किया जाता था।

राणा राजसिंहजी–प्रथम की नदी दिशा परिवर्तन कार्य में एक विशिष्ट पहचान रही। तत्पश्चात् वर्ष 1974 में वाटरशेड़ की इस अवधारणा को कृषि मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा जल एवं मिट्टी संरक्षण के लिए अपनाया गया। उदयपुर बेसिन में नदियों को जोड़ने के प्रथम प्रयास का श्रेय मेवाड़ को दिया जाता है। महाराणा फतहसिंहजी ने 13 अगस्त, 1890 में इस परियोजना का शुभारम्भ किया। अतः महाराणा फतहसिंहजी को नदियों को जोड़ने का विशिष्ट श्रेय दिया जाता है। वाटरशेड प्रबन्धन सहित प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण हेतु झीलों का यह नेटवर्क एक महत्वपूर्ण उदाहरण है। वर्तमान में ये झीलें जो उदयपुर शहर की जीवन रेखा है, अपने पारिस्थितिकी तंत्र के लिए एक सतत् खतरे का सामना कर रही हैं। इसके लिए जिम्मेदार प्रमुख कारकों में जनसंख्या विस्फोट, बड़े पैमाने पर शहरीकरण, झीलों के अन्दर एवं आसपास एवं नदियों के जलग्रहण क्षेत्रों में अतिक्रमण, चैक डेम एवं एनिकट्स के निर्माण, खनन गतिविधियाँ एवं झील क्षेत्र व पहाड़ियों में वनों की कटाई, मल जमना एवं मिट्टी का कटाव, जल प्रदूषण–स्नान एवं कपड़े धोने की गतिविधियाँ, सीवेज एवं घरेलू कचरे की समस्या, चलायमान घास, औद्योगिक प्रदूषण एवं जल–जनित रोगों की समस्या आदि प्रमुख हैं।

निष्कर्ष : उदयपुर की झीलें पिछली छः सदियों से शहर की जीवन रेखा हैं एवं भविष्य के लिए भी यह क्रम जारी रहेगा। शहर की प्रमुख आर्थिक गतिविधि पर्यटन है जो इन झीलों पर ही निर्भर है। उपरोक्त झील अंतर–संबंध, नदी दिशा परिवर्तन एवं नदी अंतर–संबंध जो कि मेवाड़ के महाराणाओं द्वारा विकसित किये गये हैं, इन झीलों के संरक्षण के लिए अनुकरणीय है।

मेवाड़ के महाराणाओं द्वारा विकसित जल संचय, संरक्षण एवं प्रबन्धन को प्रभावशाली जल प्रबन्धन हेतु पूरे देश में अपनाया जा सकता है। हालांकि नदी दिशा परिवर्तन एवं नदी अंतर–संबंध के रूप में परिकल्पना मेवाड़ के शासकों द्वारा उदयपुर बेसिन में विकसित की गई, फिर भी अतिरिक्त वर्षा जल को देश के विभिन्न भागों में कम पानी वाले शुष्क क्षेत्रों में दिशा परिवर्तन कर मोड़ा जा सकता है।

उपग्रह से : उदयपुर शहर की प्रमुख झीलें

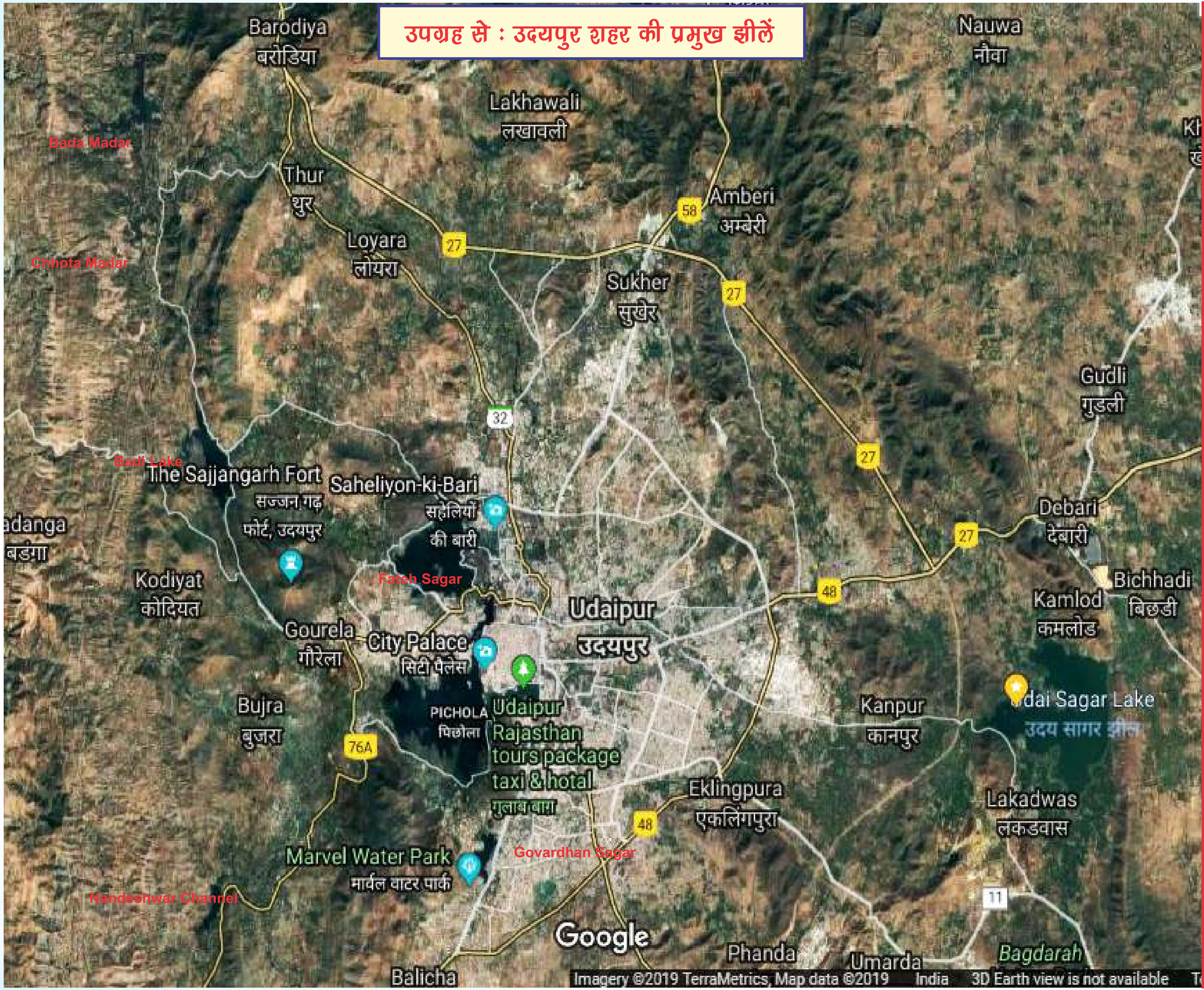

सरोवर : भगवान की क्रीड़ा–स्थली

तालाबों और बांधों को भी भारतीय जीवन पद्धति में तीर्थ स्थल स्वीकारा गया है। ज्योतिर्विद वराहमिहिर ने अपने ग्रंथ बृहत्संहिता के प्रासाद लक्षणाध्याय में लिखा है, 'पद्म पत्रों' के गुल्मों से बनी छतरियों द्वारा सूर्य की किरणों से रक्षित पानी वाले सरोवर जहाँ होते हैं, भगवान वहाँ हमेशा क्रीड़ा करते हैं, और भारत के प्राचीन एवं मध्यकालीन हिन्दू शासकों ने ऐसे तालाबों का निर्माण कर इस भारत भूमि में भगवान के एक नहीं, अनेक क्रीड़ा स्थलों का निर्माण करवाया हैं। मेवाड़ की भूमि भी इस प्रकार के मानव निर्मित तालाबों रूपी भगवान की क्रीड़ा स्थलियों से रिक्त नहीं हैं। मेवाड़ के महाराणाओं ने स्वयं पहल करके ऐसे एक नहीं अनेक तालाबों का निर्माण करवाकर अपनी प्रजा की आध्यात्मिक भावनाओं को तुष्ट करने के साथ कृषक जगत् की कृषि कार्य में सिंचाई सम्बन्धी आवश्यकताओं की संपूर्ति में पूरा सहयोग दिया है।

सत्रहवीं शताब्दी के पूर्व से ही मेवाड़ में तालाबों के निर्माण की गतिविधि प्रबल रही है; किन्तु सत्रहवीं शताब्दी की समयावधि में मेवाड़ में जितनी संख्या में और जिस प्रकार के तालाबों का निर्माण हुआ हैं, उनका सानी भारत में आद्यावधि निर्मित तालाबों में नहीं खोजा जा सकता है। ऐसे मेवाड़ के सत्रहवीं शताब्दी में निर्मित अद्वितीय तालाबों में महाराणा जगतसिंह जी के शासन काल (ई.स. 1628–1652) में निर्मित रूपसागर तालाब महाराणा राजसिंह जी के शासन काल (ई. स. 1652–1680) में निर्मित राजसमुद्र नामक तालाब, उदयपुर में निर्मित रंगसागर तालाब, उदयपुर के उत्तर पश्चिम में लगभग आठ किलोमीटर दूर स्थित 'जना सागर' तालाब (बड़ी तालाब) तथा कैलाशपुरी (एकलिंगजी) में इन्द्र सरोवर तालाब का बाँध, महाराणा जयसिंह के शासन काल (ई.सं. 1680–1698) में निर्मित जयसमुद्र तालाब (ढेबर झील), देवाली का तालाब (फतहसागर), थूर का तालाब इत्यादि प्रमुख हैं।

मेवाड़ में सत्रहवीं शताब्दी में निर्मित इन सभी तालाबों पर पक्के बाँध बनाये गए हैं। इन तालाबों के बाँध नदियों के पानी को रोकने के लिए खड़ी की गयी मात्र मजबूत आड़ या दीवार नहीं है, प्रत्युत इनमें से कतिपय भारतीय स्थापत्य–कला एवं भास्कर्य की अमूल्य निधियाँ हैं। इन तालाबों के बाँधों की निर्माण शैली तथा उनका शिल्प अनोखा है।

उदयपुर की शान

उदयपुर शहर की झीलें उदयपुर की शान है। जब ये वर्षा ऋतु में पूर्ण भराव स्तर पर होती हैं तो सुन्दरता के सर्वोच्च शिखर पर होती है। उदयपुर के प्रत्येक नागरिक की आत्मीय इच्छा है कि ये सदैव पूर्ण रूप से भरी रहें, गन्दगी एवं अतिक्रमण से मुक्त रहे, क्योंकि ये झीलें हमारे पेयजल का भी मुख्य स्रोत हैं।

झीलों का छलकना : पिछले कुछ वर्षों में शहर के जलाशयों के छलकने के आंकड़ों पर नजर डालें तो सामने आएगा कि हमारे ये जलाशय अगस्त से अक्टूबर तक छलकते हैं। जब लेकसिटी में झीलें लबालब होती हैं, तभी अरावली पर्वतमालाएँ भी हरियाली की चादर ओढ़ लेती हैं। इस समय उदयपुर आने वाले पर्यटकों एवं स्थानीय नागरिकों को ये नजारें बहुत ही सुकून देने वाले होते हैं, जो उन्हें झीलों और अरावली पहाड़ियों की ओर आकर्षित कर ले जाते हैं। उदयपुर के जनमानस को झीलों के छलकने एवं आयड़ नदी के प्रवाह के लिए सदैव इन्तजार रहता है। वर्षा ऋतु में जलाशयों में पानी आने के मुख्य स्रोत सीसारमा नदी, मदार नहर एवं प्रत्येक झील के प्रत्येक दिन के जल स्तर के समाचारों पर सभी की

जलाशय	क्षमता (फीट में)	उदयपुर की विभिन्न झीलों के छलकाव का वर्षवार विवरण											
		2011	2012	2013	2014	2015	2016	2017	2018	2019	2020	2021	2022
फतहसागर	13	4 सित.	13 सित.	14 अक्टू.	13 सित.	13 अग.	17 अग.	3 अग.	–	2 सित.	7 अक्टू.	7 अक्टू.	14 अग.
पिछोला	11	31 सित.	9 सित.	30 अग.	12 सित.	30 जुला.	11 अग.	30 अग.	–	31 अग.	31 अग.	1 अक्टू.	13 अग.
बड़ी तालाब	32	–	–	–	–	–	–	26 सित.	–	–	–	–	28 अग.
मदार बड़ा	24	12 सित.	9 सित.	13 अग.	9 सित.	30 जुला.	1 अग.	25 जुला.	–	26 अग.	25 अग.	16 सित.	19 जुला.
मदार छोटा	21	27 अग.	8 सित.	23 सित.	10 सित.	29 जुला.	10 अग.	27 जुला.	9 सित.	26 अग.	6 अग.	28 सित.	21 जुला.
गोवर्द्धन सागर	09	27 अग.	13 सित.	10 अग.	9 सित.	11 अग.	13 अग.	1 सित.	–	26 अग.	30 सित.	16 सित.	12 अग.
उदयसागर	24	9 सित.	16 सित.	1 अक्टू.	11 सित.	30 अग.	8 सित.	14 सित.	–	5 सित.	9 सित.	18 नव.	13 अग.

नजरें टिकी रहती हैं। झीलों का जल स्तर ऊँचा आने एवं छलकते ही उन्हें निहारने हेतु आमजन का मेला सा लग जाता है। दैनिक समाचार पत्र भी इस जानकारी को प्रमुखता से प्रकाशित करते हैं। इन दिनों फतहसागर एवं पिछोला के पश्चिमी छोर पर स्थित अरावली की पहाड़ियों विशेषकर सज्जनगढ़ एवं झीलों की जल सतह को चूमने के लिए सुहावने बादल नीचे आ जाते हैं तथा प्रातःकालीन यह दृश्य हम सभी के लिए अत्यन्त रोमांचकारी एवं आकर्षक होता है।

वर्ष 2011 से लेकर वर्ष 2022 तक फतहसागर, पिछोला, मदार बड़ा, मदार छोटा, गोवर्द्धन सागर व उदयसागर वर्ष 2018 के अलावा हर वर्ष छलकते रहे। मदार छोटा इन सभी वर्षों के अतिरिक्त वर्ष 2018 में भी कम वर्षा के बावजूद भी छलका। इस क्रम में वर्ष 2011 से अब तक के आंकड़ें देखें तो बड़ी तालाब सिर्फ दो बार ही छलका है। यह तालाब 26 सितम्बर, 2017 एवं 28 अगस्त, 2022 को पूरा 32 फीट भरा और छलका था। इस तालाब का कैचमेन्ट एरिया कम है। इसके कैचमेन्ट का पानी सड़क एवं अन्य निर्माण के कारण मदार छोटा में चला जाता है।

झीलें एवं वर्षा की मात्रा : उदयपुर के जलाशयों का छलकना, पर्याप्त औसत वर्षा एवं देवास प्रथम, मानसी वाकल प्रथम, देवास द्वितीय से बेड़च बेसिन में प्राप्त अतिरिक्त पानी से वर्ष 2011 से 2022 के मध्य 12 में से 11 वर्षों में शहर की मुख्य झीलें नियमित भरने, छलकने और पेयजल आपूर्ति में सहयोग

उदयपुर में वर्षा का वर्षवार विवरण	
वर्ष	वर्षा (एम.एम. में)
2011	691.50
2012	853.90
2013	762.30
2014	579.20
2015	581.30
2016	867.70
2017	565.60
2018	572.30
2019	890.10
2020	802.00
2021	407.00
2022	769.00
औसत	**695.16**
उदयपुर औसत	**625.00**

मिला। उदयपुर में औसत वर्षा 625 एम.एम. होती है। पिछले 12 वर्षों के वर्षा के आंकड़ों पर दृष्टि डाले तो 7 वर्षों में वर्षा औसत से अधिक एवं 5 वर्षों में औसत से कम रही। वर्ष 2012, 2016, 2019 एवं 2020 में 800 एम.एम. से अधिक वर्षा हुई। वर्ष 2019 में सबसे अधिक वर्षा (890.1 एमएम) होने से पिछले 8 वर्षों का रिकॉर्ड टूट गया। वर्षा की पर्याप्त मात्रा एवं साबरमती बेसिन से पानी की आवक से उदयपुर की झीलें लबालब हो पाई।

झीलों की जल भराव स्थिति : झीलों की यह स्थिति देखकर राज्यभर में यह धारणा बन गई है कि उदयपुर में भरपूर पानी है। ऐसे में अन्य झीलों में यहाँ का पानी ले जाने की राजनीतिक उठापटक भी शुरू हो गयी है। इसके चलते देवास तृतीय एवं चतुर्थ के पानी को राजसमन्द ले जाने की योजना बनी, सर्वे में इसे संभव नहीं माना गया। वहीं अब इस पानी को वाकल, जवाई पुनर्भरण योजना बनाकर सई बाँध होते हुए जवाई बाँध में डालकर जोधपुर ले जाने की योजना उच्च स्तर पर विचाराधीन है। यदि ऐसा हुआ तो उदयपुर क्षेत्र में इसके दुष्परिणाम कुछ ही वर्षों में सामने आने लगेंगे। झीलें वर्षा ऋतु के बाद पेयजल उठाव के साथ खाली होती रहती हैं। झीलों की सुन्दरता में गिरावट के साथ पेयजल की नियमित उपलब्धता में भी कमी आने लगती है। वर्ष 2018 का उदाहरण हमारे सामने है। जब झीले करीब–करीब रिक्त हो गई एवं पेयजल उपलब्धता कुछ क्षेत्रों में 72 घंटों में एक बार कर दी गई है। वर्तमान में उदयपुरवासियों को पेजयल 48 घंटों में एक बार मिल रहा है जबकि स्मार्ट सिटी परियोजना के अन्तर्गत प्रत्येक दिन पेयजल उपलब्ध होना चाहिये।

पर्यटकों के साथ आम नागरिक भी झीलों की इस दुर्दशा पर चिंतित है। अपने जिले के ही पूर्वी भाग यथा कोटड़ा एवं झाड़ोल तहसील के साबरमती बेसिन में उपलब्ध अतिरिक्त पानी को व्यर्थ में बहकर गुजरात एवं अन्य पड़ौसी जिले में नहीं जावें इस हेतु सघन प्रयास किये जाने चाहिये। हमें अपने व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठकर शहर की चिंता संयुक्त रूप से करनी होगी। झीलों को सदा भरी रखने एवं बढ़ती हुई जनसंख्या को

पिछोला : जून, 2019

अमरकुण्ड : जून, 2019

पिछोला : सितम्बर, 2019

राष्ट्रीय मापदण्ड के अनुसार पर्याप्त पेयजल उपलब्धता हेतु ठोस प्रयत्न सभी को मिलकर करने होंगे।

काश! देवास तृतीय व चतुर्थ एवं मानसी वाकल तृतीय व चतुर्थ तथा माही–जाखम–जयसमन्द परियोजनाएं समयावधि में पूर्ण कर लिए जावें तो साबरमती एवं माही बेसिन में बहकर समुद्र में समाहित होने वाले जल का दिशा परिवर्तन कर उदयपुर की सुन्दर झीलों को वर्षभर भरा रख सकेंगे। इससे पर्यटकों की संख्या में अप्रत्याशित वृद्धि होगी एवं बढ़ती हुई जनसंख्या की पेयजल की आवश्यकता की पूर्ति भी संभव हो सकेगी। भुजा एवं सांडमारिया बांध से 15 फतहसागर के बराबर पानी साबरमती बेसिन से पाली जिले में स्थित जवाई बांध में ले जाने हेतु राज्य सरकार ने स्वीकृति प्रदान कर दी है, जो कि किसी भी दृष्टिकोण से मेवाड़ के हित में नहीं है।

इसके अतिरिक्त वीरधरा मेवाड़ के उदयपुर को प्रकृति ने अतुल्य सौगातें दी हैं, जिनकी बदौलत ये देश–विदेश के पर्यटकों को आकर्षित करती हैं। उदयपुर को पूर्व का वेनिस कहें या दुनिया का सबसे खूबसूरत शहर या फिर पसंदीदा हॉली–डे डेस्टिनेशन, ये सारे तमगे इसकी चमक बढ़ाते हैं। ये विश्व के दूसरे खूबसूरत शहरों से कम नहीं है। अंग्रेजों के राज से लेकर स्मार्टसिटी बनने तक के सफर में यहाँ की खूबसूरती वर्ष–दर–वर्ष बढ़ती रही है। शहर की खास बात यह हैं कि यह गौरवशाली इतिहास, पुरानी विरासत, हवेलियाँ, प्राकृतिक सौन्दर्य के साथ ही नए बदलाव को भी साथ लेकर चल रहा है तथा यही तालमेल यहाँ पर पर्यटकों को खींच कर ला रहा है।

शहर के प्रमुख पर्यटन स्थलों में सिटी पैलेस, जगदीश मन्दिर, गुलाब बाग, दूध तलाई, एवं वहां स्थित माणिक्यलाल वर्मा एवं दीनदयाल उपाध्याय पार्क, माछला मगरा स्थित करणीमाता मन्दिर एवं रोप–वे, पिछोला का गणगौर घाट, अमराई घाट, लेक–पैलेस, जग–मन्दिर, फतहसागर, फिश एक्वेरियम, मोती मगरी, नेहरू पार्क, सहेलियों की बाड़ी, सुखाड़िया सर्कल, सज्जनगढ़, बायोलोजिकल पार्क, बड़ी तालाब, बाहुबली हिल्स, बाघदड़ा नेचर पार्क, गोवर्द्धन सागर एवं वहां स्थित भण्डारी पार्क, जहाजनुमा पन्नाधाय दीर्घा, उद्यान व रिंग रोड, चीरवा घाटे में स्थित फूलों की घाटी में जिपलाईन का रोमांच और हरीतिमा, टाइगर हिल्स स्थित प्रताप गौरव केन्द्र, अम्बेरी स्थित जैव विविधता पार्क आदि प्रमुख हैं। शहर की खूबसूरती के साथ ही यहाँ के तीज त्यौहारों में भी पर्यटकों की भागीदारी रहती हैं जिसमें प्रमुख मेवाड़ महोत्सव, गणगौर, होली, दीपावली, जन्माष्टमी, जलझूलनी एकादशी सहित कई त्यौहारों पर पर्यटक शामिल होते हैं।